फ़रेबी नंबर वन ब्रह्मर्षि श्री कुमार स्वामी से सावधान

-मज़दूर मोर्चा ब्यूरो

धर्म के नाम पर जनता को हज़ारों वर्षों से लूटा जा रहा है। आज 21 वी सदी में जब मनुष्य महासागरों की अतल गहराइयों और अंतरिक्ष के अपार विस्तार की थाह ले रहा है। और नित नई वैज्ञानिक उद्भावनायें सामने आ रही हैं, इसे आश्चर्य ही कहेंगे कि धर्म के नाम पर जनता को लूटने वालों के प्रभाव में जरा भी कमी नहीं आई है।

मध्य युग में जिसे यूरोप में 'अंधकार का युग' कहा गया, धर्म के नाम पर चर्च ने लूट की हद पार कर दी थी। चर्च के पंडे पुरोहित चोरों-डाकुओं-अपराधियों-दुष्कर्मियों को 'पापमोचन पत्र' बेचा करते थे। हर स्तर के पादरी व्यभिचार में दिन-रात लिप्त रहते थे। इसे देखते हुए नवजागरण कालीन दार्शनिक वाल्टेयर ने नारा दिया था-'भ्रष्ट गिरजे को नष्ट कर दो।' धार्मिक कूपमंडूकता और अंधविश्वास के ख़िलाफ़ भारत में भी विचारकों ने अभियान चलाये, पर यहां अंधकार की शक्तियों को पूरी तरह नष्ट नहीं किया जा सका। यूरोप और अमेरिका में भी पूरी तरह ऐसा नहीं हो पाया, क्योंकि जनता की लूट पर आधारित दमन यंत्र राज्य के लिये धार्मिक कूपमंडूकता और अंधविश्वास का प्रसार जरूरी था। धर्म की अफ़ीम जनता के लिए जरूरी समझी गई ताकि उसकी आंखें न खुल सके और वह आर्थिक शोषण, उत्पीड़न और अन्याय के ख़िलाफ़ आवाज़ न उठा सके। इस काम में शासकों की सहायता के लिये बड़े-बड़े बुद्धिजीवी, विचारक, नेता-अभिनेता और सबसे बढकर मीडिया सामने आया। मीडिया जिसे लोकतंत्र का चौथा स्तंभ कहा गया है और जनता को जागरूक करना जिसकी सबसे बड़ी ज़िम्मेदारी मानी गई है, वह भ्रष्ट लुटेरे शासकों का सबसे बड़ा सहयोगी बन कर सामने आ गया है।

आज हमारे देश में धर्म के नाम पर जनता को लूटने और औरतों को बेवकूफ़ बनाकर उनकी इज्ज़त के साथ खेलने वाले बाबाओं, साधुओं, महर्षियों, भोगाचार्यों, शंकराचार्यों और धर्माधीशों की बाढ़-सी आ गई है। इन्हें सत्ताधारियों और मीडिया का पूरा समर्थन हासिल है। खास बात यह है कि इसी समर्थन के बल पर ये जनता को लूट-लूट कर अपना अरबों का साम्राज्य खड़ा कर रहे हैं।

धर्म के नाम पर देश-विदेश में अपना बहुत बड़ा साम्राज्य चलाने वाला आसाराम और उसका बेटा नारायण साईं अनेकों महिलाओं के यौन शोषण के आरोप में जेल में बंद है, पर उसे छुड़ाने के प्रयास नेताओं ने कम नहीं किए और यह बात भी तय है कि कुछ दिनों के बाद वह फ़िर से लोग़ों को लूटने और महिलाओं की इज्ज़त तार-तार करने के लिए आज़ाद हो जाएगा।

बहरहाल, यहां जिस लुटेरे की चर्चा की जा रही है, वह मामूली घाघ नहीं है। वह बरसों से देश और विदेशों में धर्म के नाम पर लोग़ों को उल्लू बनाने और उन्हें लूटने का धंधा चला रहा है। इस ढोंगी का नाम है ब्रह्मर्षि श्री कुमार स्वामी। यह देश भर के बड़े-बड़े शहरों में सालों भर 'दुख निवारण महासमागम' का आयोजन करता है। इसका दावा है कि 'प्रभुकृपा दुख निवारण महासमागम' में यह जो मंत्र देता है, उसके पाठ से बड़ी से बड़ी समस्या पलक झपकते दूर हो जाती है। मंत्र पाठ से कैंसर तक ठीक हो जाता है, अंधा देखने लगता है, लंगड़ा पर्वत पर चढ़ सकता है, और रही ग़रीबी और कर्ज़ जैसी समस्याएं तो ये तो बहुत मामूली हैं। चलिए, इस

यह विचारणीय है कि आखिर क्या वजह रही होगी कि वैज्ञानिक कहे जाने वाले पूर्व राष्ट्रपति अब्दुल कलाम ने ऐसे ढोंगी का सम्मान किया । यही नहीं, देश-विदेश के इतने प्रभावशाली लोग और संस्थाएं इसका सम्मान कर रही हैं। फ़िर जनता इस पर यकिन क्यों न करें! 'महाजनो येन गतः स पंथाः।' पर क्या मंत्र शक्ति से कैंसर ठीक होगा और अंधे को सब कुछ दिखाई पड़ने लगेगा? अगर कुमार स्वामी सही है तो विज्ञान गलत है और विज्ञान सही है तो कुमार स्वामी गलत। अगर किसी में है दम तो कहे विज्ञान को गलत। ये भी कोई नहीं कह सकता फ़िर ये मंत्रशक्ति कुल मिलाकर कुमार स्वामी मंत्रशक्ति के प्रभाव के नाम पर लोग़ों को उल्लू बना रहा है।

तरह का दावा तो प्राय: पंडे-पुजारी और चमत्कारी बाबा करते ही रहते हैं, उनकी बातों को सच कौन मानता है! लेकिन कुमार स्वामी की बात को आम जनता सच क्यों न माने?

आख़िर अभिनेत्री और धर्म ध्वजा लहराने वाली पार्टी भाजपा की नेत्री हेमामालिनी भी इस ढोंगी की जय-जयकार में लगी हैं। और यही क्यों, मीडिया के माध्यम से यह दावा कर रहा है कि उसका सम्मान राष्ट्रपति भवन में प्रो. अब्दुलकलाम ने किया था। यही नहीं, मीडिया में यह भी सामने आ रहा है कि प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार नरेन्द्र मोदी भी इसके मंत्र शक्ति में पूरा यकीन रखते हैं। लालकृष्ण आडवाणी, भूपेन्द्र सिंह हुड्डा, प्रकाश सिंह बादल और वीर भद्र सिंह जैसे नेता भी इसके चरणों में शीश नवाते हैं। ये चंद नाम हैं। जरूरत पड़ने पर कुमार स्वामी सोनिया और राहुल, नीतीश और मुलायम के सर्टिफिकेट भी ला सकता है। शंकराचार्यों और महामंडलेश्वरों ने तो इसे पूरा सम्मान दिया ही है।

अगर आपको अभी भी कुछ शक हो तो इस पाखंडी के पास विदेशों में भी मिले सर्टिफिकेट हैं। इसे इंग्लैंड की पार्लियामेंट, हाउस ऑफ कॉमन्स से अवार्ड मिल चुका है। अमेरिका की सीनेट ने निर्विरोध प्रस्ताव पारित कर इसका विशेष सम्मान किया है। मॉरीशस के राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री ने भी इसे अवार्ड दिया है। मॉरीशस के प्रधानमंत्री श्री नवीन रामगुलाम इसके चरणों में बैठकर कृपा ग्रहण करते हुए दिखाई पड़ते हैं। अमेरिका के राष्ट्रपति बराक ओबामा का हस्ताक्षरित 'एम्बैंसडर ऑफ पीस अवार्ड' इसके पास है और अब तक इसने लगभग 400 समागम आयोजित किए है।

काशी के विद्वानों ने भी इसे विश्वसंत की पदवी से विभूषित किया है। अखिल भारतीय विद्वत परिषद् और काशी विद्वत परिषद के सर्टिफिकेट भी इसके पास हैं। फ़िर जनता इसे सिर-आंखों पर क्यों न बिठाए और मीडिया इसका प्रचार क्यों न करे? यह करोड़ों-करोड़ के विज्ञापन सभी अख़बारों को देता है। पूरे-पूरे पेज के विज्ञापन सभी अखबारों की शोभा बढ़ाते हैं। देश के किसी राज्य को इसने नहीं छोड़ा। अमीर राज्यों में लूटने के अधिक अवसर हैं, इसलिए वहां अधिक समागम करता है, बाकी बिहार और ओडिसा जैसे पिछड़े राज्यों में भी यदा-कदा चला जाता है। जहां समय की कमी की वजह से नहीं जा पाता, वहां इसके एजेंट सक्रिय हैं। विदेशों में भी मंत्र शक्ति का चमत्कार दिखाने और सर्टिफिकेट लाने यह जाया करता है। अपने विज्ञापनों में यह साफ़ कहता है कि उसके 'चमत्कारों' से वैज्ञानिक व बुद्धिजीवी जगत स्तब्ध है। बात भी सही है। स्तब्ध नहीं होता तो सवाल तो पूछ ही सकता था कि मंत्र से कैंसर कैसे ठीक होगा और अंधा देखने कैसे लगेगा। और वास्तव में मंत्र शक्ति से ही ऐसा होता है तो फ़िर अस्पतालों, डॉक्टरों और रिसर्च सेंटर्स की क्या जरूरत है। सभी बंद किए जाएं और इस पाखंडी के मंत्र को हर समस्या का एकमात्र समाधान माना जाए।

जब पूर्व राष्ट्रपति अब्दुल कलाम ने राष्ट्रपति भवन में इसे सम्मानित किया तो उन्हें उसी वक़्त ऐसी व्यवस्था करनी चाहिए थी। ऐसे चमत्कारी पुरुष के रहते देश में मिसाइलों और मिसाइलमैन की क्या जरूरत? इसकी मंत्र शक्ति से दुश्मन पलभर में धूल चाटेगा। यही नहीं, जितनी तरह की समस्याएं हैं, सभी का समाधान इसकी मंत्र शक्ति से होगा। मंत्र शक्ति से कुमार स्वामी अजर-अमर भी होगा। यही इस देश का उद्धार करेगा । अब्दुल कलाम को इसे सम्मानित कर ही नहीं छोड़ना चाहिए था, इसकी मंत्र शक्ति से देश को सुपर पावर बना देना चाहिए था। अब अनेकों नेताओं और उनमें सबसे बढ़कर नरेंन्द्र मोदी ने इसे सर्टिफिकेट दिया है तो अगर वे प्रधानमंत्री बने तो इसकी मंत्रशक्ति के प्रभाव से देश को अमेरिका से आगे ले जाएंगे। संभव है, गुजरात का 'विकास'उन्होंने इसकी मंत्रशक्ति से ही किया हो।

यह विचारणीय है कि आखिर क्या वजह रही होगी कि वैज्ञानिक कहे जाने वाले पूर्व राष्ट्रपति अब्दुल कलाम ने ऐसे ढोंगी का सम्मान किया । यही नहीं, देश-विदेश के इतने प्रभावशाली लोग और संस्थाएं इसका सम्मान कर रही हैं। फ़िर जनता इस पर यकिन क्यों न करें! 'महाजनो येन गत: स पंथा:।'

पर क्या मंत्र शक्ति से कैंसर ठीक होगा और अंधे को सब कुछ दिखाई पड़ने लगेगा? अगर कुमार स्वामी सही है तो विज्ञान गलत है और विज्ञान सही है तो कुमार स्वामी गलत। अगर किसी में है दम तो कहे विज्ञान को गलत। ये भी कोई नहीं कह सकता। कुल मिलाकर कुमार स्वामी मंत्रशक्ति के प्रभाव के नाम पर लोग़ों को उल्लू बना रहा है।

'मज़दूर मोर्चा' ने इस गुरु घंटाल का असली चेहरा बार-बार पाठकों के सामने लाने की कोशिश की है, लेकिन इसके साथ जब इतने बड़े-बड़े लोग खड़े हैं तो कोई इसका क्या बिगाड़ लेगा। मीडिया पैसे लेकर इसका विज्ञापन कर रहा है और राजनीति से लेकर फ़िल्म जगत तक की हस्तियां इसके कसीदे पढ़ रही हैं। ऐसे में, अब जनता को ही यह देखना होगा कि कुमार स्वामी जैसों के फ़रेबजाल से कैसे बचे?

सेमिनार : मीडिया और मज़दूर वर्ग

फ़रीदाबाद (म.मो.) नागरिक अधिकारों को समर्पित' पत्र द्वारा शहीद भगत सिंह, सुखदेव व राजगुरू के शहादत दिवस पर 'मज़दूर वर्ग व मीडिया' विषय पर वार्षिक सेमिनार किया। सेमिनार का आरम्भ भगत सिंह के प्रिय गीत 'मेरा रंग दे बसंती चोला' से हुआ तथा अमर शहीदों को याद करते हुए जबर्दस्त नारों से सभागार गूंज उठा। विषय प्रवर्तन करते हुए साथी कमलेश ने नागरिक पत्र द्वारा प्रस्तुत सेमिनार की विषय वस्तु को संक्षेप में रखा। सेमिनार को संबोधित करते हुए जन मीडिया के संपादक व प्रसिद्ध स्तंभकार अनिल चमड़िया ने कहा कि आज बड़े कारपोरेट घराने मीडिया को संचालित कर रहे हैं जो कि भूमंडलीकरण की प्रक्रिया के वाहक हैं। उन्होंने कहा कि अज़ादी के बाद से मीडिया संस्थानों की संपत्ति में भरपूर इजाफ़ा हुआ है। इसके बरक्स मज़दूर वर्ग की आय में गिरावट हुई है। उन्होंने कहा कि उदारीकरण के दौर में मीडिया घरानों द्वारा पूंजी संचय की प्रक्रिया और तेज़ हुई है। उन्होंने वर्ग चेतना के निर्माण की जरूरत को सर्वोपरि बताया।

समयांतर पत्रिका के संपादक श्री पंकज बिष्ट ने कहा कि मीडिया का ज्यों ज्यों आकार बढ़ा है उसका कॉर्पोरेटीकरण हुआ है। उन्होंने कहा कि उदारीकरण के दौर में पूंजी द्वारा श्रमिकों पर चौतरफ़ा हमला बोला जा रहा है ऐसे में कॉर्पोरेट मीडिया के समकक्ष एक वैकल्पिक मीडिया को खड़ा करना हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए। फ़रीदाबाद से प्रकाशित पत्र मज़दूर मोर्चा के संपादक सतीश कुमार ने कहा कि आज तमाम मीडिया चैनल अंधविश्वास पाखंड और झूठ को फैला रहे हैं। वैकल्पिक मीडिया की जरूरत को उन्होंने भी रेखांकित किया।

दैनिक हिंदुस्तान के वरिष्ठ रिपोर्टर केशव भारद्वाज ने कहा कि तमाम मीडिया चैनल टी. आर. पी. से संचालित होते हैं। उन्होंने बताया कि देश में लगभग 8100 घरों में मीटर लगे हैं। वे ही तय करते हैं कि क्या दिखाया जाय। जाहिर है कि ये मीटर बड़े-बड़े पूंजीपतियों व अमीरों के घरों में लगे हैं। वरिष्ठ पत्रकार व समकालीन तीसरी दुनिया के संपादक आनंद स्वरूप वर्मा ने कहा कि तथाकथित मुख्यधारा का मीडिया अथवा पूंजीवादी प्रचार माध्यम पूरी तरह साम्राज्यवादी व पूंजीवादी तत्वों को साधता है। उन्होंने कहा कि मीडिया के विस्तार के साथ खबरों का स्थानीयकरण होता चला गया है और जनता खबरों से कटती चली गयी है। 1990 से जारी वैश्वीकरण की प्रक्रिया के दौर में एक अंतर्निहित तंत्र काम करता है जिसका मकसद है जनान्दोलनों की खबरों को पूरी तरह ब्लैक आउट करना क्योंकि इससे पूंजी निवेश पर नकारात्मक फर्क पड़ता है। उन्होंने बताया कि आज विश्व बैंक व साम्राज्यवादी संस्थायें देश की नीतियों को प्रभावित कर रहे हैं। उन्होंने वैकल्पिक मीडिया को एक आंदोलन के रूप में विकसित करने की बात को तथा मित्र शक्तियों की पहचान को जरूरी बताया। उन्होंने प्रतिरोधी मीडिया को आन्दोलनकारी शक्तियों के साथ जुड़ना जरूरी बताया।

सेमिनार को संबोधित करते हुए साहित्य उपक्रम से साथी विकास नारायण राय ने कहा कि मज़दूर आन्दोलन व जनपक्षधर पत्रकारिता को साथ आना चाहिए तभी पूंजीवादी प्रचारतंत्र का मुकाबला किया जा सकता है।

इंकलाबी मज़दूर केन्द्र की ओर से बात रखते हुए नागेन्द्र ने कहा कि परंपरागत मीडिया पर हमेशा पूंजीवादी घरानों का वर्चस्व रहा है लेकिन इसके समानान्तर एक प्रतिरोधी मीडिया हमेशा मौजूद रहा है। आज जरूरत प्रतिरोधी मीडिया व प्रतिरोध की शक्तियों को एकजुट करने की है। परिर्वनकामी छात्र संगठन के अध्यक्ष नितिन ने कहा कि वैचारिक मोर्चे व सांस्कृतिक मोर्चे पर संघर्ष, वर्ग संघर्ष का सबसे जरूरी हिस्सा है। उन्होंनें कहा आज देश में मज़दूरों किसानों की स्थिति लगातार बद से बदतर हाती जा रही है। पूंजीवादी प्रचार माध्यम इन ज्वल्लंत सच्चाइयों पर पर्दा डालने का काम कर रहा है-उन्होंने मज़दूर वर्ग के संघर्षो जनान्दोलनों व एक शोषण विहीन समाज के अभीष्ट के बगैर कोई वैकल्पिक मीडिया नहीं खड़ा हो सकता है।

सेमिनार में भागीदारी करते हुए युवा पत्रकार विशाल कुमार ने कहा कि श्रम के प्रति समाज में नकारात्मक धारणा फैलायी गयी है। इसके लिए प्रभुत्वशाली लोग जिम्मेवार है। मज़दूर वर्ग को एकजुट होकर आत्मविश्वास के साथ आगे आना होगा। ऑल वीनस वर्कर्स यूनियन की ओर से साथी वीरेन्द्र सिंह तोमर ने कहा कि मीडिया आज मज़दूर वर्ग की संघर्ष की चेतना को कुंद कर रहा है।

पूंजीवादी मीडिया मज़दूर मेहनतकशों के मानस पटल को प्रभावित कर उसे पूंजीवादी दायरे में सीमित रखता है तथा क्रांतिकारी दिशा की तरफ़जाने से मज़दूर वर्ग को रोकता है व भटकाता है। उन्होंने पूंजीपति वर्ग व पूंजीवादी प्रचार माध्यम का मुकाबला मज़दूर वर्ग की क्रांतिकारी एकजुटता से दिया जा सकता है। नागरिक पत्र के सम्पादक मुनीष कुमार ने कहा कि पूंजीवादी व्यवस्था की लूट शोषण दमन पर पर्दा डालने के साथ सरेआम झूठ व मिथ्या विश्वासों के प्रसार का काम पूंजीवादी समाचार माध्यम कर रहे हैं। चुनाव के मौसम में ये चुनावी समीकरण तय करते समय भी वे जाति धर्म के बंटवारों को प्रचारित करते है जबकि वर्गीय संरचना पर पर्दा डालते हैं। उन्होंने कहा कि पूंजीपति वर्ग की मीडिया पर प्रभाव का अंदाज इसी से लगाया जा सकता है कि तमाम मीडिया चैनलों के मालिक पूंजीपति व पूंजीवादी नेता हैं। अकेले अंबानी समूह 27 समाचार व मनोरंजन चैनलों को चला रहा है। उन्होंने बताया कि पूंजीवादी प्रचार माध्यमों द्वारा फैलाये गए भ्रम को तोड़कर वास्तविक मुक्ति के रास्ते के रूप में समाजवाद के विकल्प को मजबूती से स्थापित करना है।

उन्होंने पूंजीवादी प्रचार माध्यमों द्वारा फैलाये गए भ्रम को तोड़कर वास्तविक मुक्ति के रास्ते के रूप में समाजवाद के विकल्प को मजबूती से बस्थापित करना है। उन्होंने पूंजीवादी प्रचार माध्यमों द्वारा फैलाये गए वैचारिक व सांस्कृतिक प्रदूषण से निपटने के लिए एक सांस्कृतिक आंदोलन की जरूरत को रेखांकित किया तथा वर्ग संघर्ष को आगे बढ़ाने की जरूरत पर जोर दिया। सेमिनार का संचालन इंकलाबी मज़दूर केन्द्र के रोहित ने किया।